Bihar Assistant Professor Economics Sample Paper

Q1. निम्नलिखित में से किसे सैमुएलसन-होल्ट सूत्र द्वारा मापा जाता है?
(a) उपभोक्ता अधिशेष
(b) उपभोक्ता संतुलन
(c) सीमांत उपयोगिता
(d) मांग की लोच
Correct Answer: (d) माँग की लोच
सैमुअलसन-होल्ट सूत्र अर्थशास्त्र में एक विशिष्ट अवधारणा है जो माँग की लोच के मापन से संबंधित है।
Information Booster:
• सैमुअलसन-होल्ट सूत्र का उपयोग किसी दिए गए माँग फलन से माँग की बिंदु लोच की गणना करने के लिए किया जाता है। यह माँग वक्र पर एक विशिष्ट बिंदु पर लोच की गणना करने की एक विधि प्रदान करता है।
• सूत्र को इस प्रकार व्यक्त किया जाता है:

$$E_d = \frac{dQ}{dP} \times \frac{P}{Q}$$

जहां Ed मांग की कीमत लोच है, dQ/dP कीमत के संबंध में मात्रा का व्युत्पन्न है, और P और Q माप बिंदु पर कीमत और मात्रा हैं।
• इस सूत्र का श्रेय पॉल सैमुएलसन और चार्ल्स होल्ट को दिया जाता है, जिन्होंने आर्थिक सिद्धांत में लोच मापन के परिशोधन में योगदान दिया।
Additional Knowledge:
• **विकल्प (a), (b), और (c) गलत हैं:**
(a) उपभोक्ता अधिशेष को माँग वक्र के नीचे और मूल्य रेखा के ऊपर के क्षेत्र का उपयोग करके मापा जाता है।
(b) उपभोक्ता संतुलन तब प्राप्त होता है जब बजट रेखा उदासीनता वक्र (क्रमिक उपयोगिता सिद्धांत में) के स्पर्शरेखा पर होती है या जहाँ सभी वस्तुओं के लिए MU/P समान होता है (कार्डिनल उपयोगिता सिद्धांत में)।
(c) सीमांत उपयोगिता किसी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई के उपभोग से प्राप्त अतिरिक्त उपयोगिता है और इसे सैमुएलसन-होल्ट सूत्र द्वारा सीधे नहीं मापा जाता है।

Q2. गिफेन वस्तु के लिए मांग की कीमत लोच है:
(a) नकारात्मक
(b) शून्य
(c) एक से बड़ा
(d) सकारात्मक
उत्तर. (d) सकारात्मक
हल:
• जब किसी गिफेन वस्तु की कीमत बढ़ती है, तो माँग भी बढ़ जाती है, क्योंकि आय प्रभाव (अर्थात, उपभोक्ताओं की वास्तविक आय प्रभावी रूप से कम हो जाती है) प्रतिस्थापन प्रभाव से अधिक होता है।
• इसके परिणामस्वरूप **माँग की सकारात्मक मूल्य लोच** उत्पन्न होती है, जिसका अर्थ है कि कीमत बढ़ने पर माँग भी बढ़ती है।
Information Booster:
• **गिफेन वस्तु** एक विशेष प्रकार की घटिया वस्तु है जो **माँग के नियम** का उल्लंघन करती है। आमतौर पर, जैसे-जैसे किसी वस्तु की कीमत बढ़ती है, माँग की मात्रा घटती जाती है, लेकिन गिफेन वस्तुओं के मामले में, इसके विपरीत होता है।
• उदाहरण: गिफेन वस्तुओं के ऐतिहासिक उदाहरणों में आर्थिक कठिनाई के दौर में रोटी शामिल है, जब यह मुख्य भोजन थी। जैसे-जैसे ब्रेड की कीमतें बढ़ीं, लोग मांस और अन्य विकल्प नहीं खरीद पा रहे थे, इसलिए उन्होंने ज़्यादा ब्रेड ख़रीदी।
Additional Knowledge:
• विकल्प (a) ऋणात्मक: गलत। अधिकांश वस्तुओं के लिए, माँग की कीमत लोच **ऋणात्मक** होती है (कीमत और माँग के बीच व्युत्क्रम संबंध)।
• विकल्प (b) शून्य: गलत। शून्य लोच यह दर्शाती है कि **माँग की मात्रा मूल्य परिवर्तन के साथ नहीं बदलती**, जो गिफेन वस्तुओं पर लागू नहीं होता।
• विकल्प (c) एक से अधिक: गलत। **1 से अधिक** लोचदार माँग को दर्शाता है, लेकिन **गिफेन वस्तुओं** में **सकारात्मक लोच** होती है (जो इस मामले में आमतौर पर **अलोचदार** होती है)।

Q3. किसी वस्तु का मांग फलन $Q_d = 80 - 4P$ द्वारा दिया जाता है. मांग की कीमत लोच (बिंदु विधि) की गणना करें जब कीमत (P) ₹15 है।

(a) लोचदार

(b) अलचकदार

(c) एक

(d) एक से कम

सही विकल्प: A. लोचदार

हल: मांग की बिंदु लोच का सूत्र (E_d) is: $E_d = \frac{dQ_d}{dP} \times \frac{P}{Q_d}$

1. व्युत्पन्न ज्ञात करें:

$Q_d = 80 - 4P$

$\frac{dQ_d}{dP} = \frac{d(80 - 4P)}{dP} = -4$

2. मांग की गई मात्रा ज्ञात कीजिए (Q_d) at P = 15:

$Q_d = 80 - 4 \times 15$

$Q_d = 80 - 60 = 20$ units

3. मांग की लोच की गणना करें:

$E_d = -4 \times \frac{15}{20}$

$E_d = -3$

निष्कर्ष: माँग की कीमत लोच -3 है। चूँकि $E_d > 1$ है, इस कीमत पर माँग लोचदार है।
नोट: माँग की मात्रा और कीमत के बीच व्युत्क्रम संबंध के कारण माँग की लोच सदैव धनात्मक होती है।

Q4. किसी वस्तु के लिए मांग वक्र P = 20 - 2Q द्वारा दिया गया है, और आपूर्ति वक्र P = 4 + Q है। संतुलन मूल्य निर्धारित होने पर उपभोक्ता अधिशेष की गणना करें।

(a) 28.42 रु.

(b) 27 रु.

(c) 30 रु.

(d) 58.27 रु.

Ans.(a)

Sol.

सही उत्तर: विकल्प (A) उपभोक्ता अधिशेष = ₹28.42

हल:

चरण 1: संतुलन मूल्य और मात्रा ज्ञात करें

- **दिया गया है:** मांग वक्र: P = 20 - 2Q , आपूर्ति वक्र: P = 4 + Q
- **Q के लिए हल करें:**
  - 20 - 4 = 2Q + Q
  - 16 = 3Q
  - Q = 16/3 = 5.33
- अब **Q = 5.33** को मांग या आपूर्ति वक्र में से किसी एक में स्थापित करके **P** ज्ञात करें। आइए आपूर्ति वक्र का उपयोग करें:
  - P = 4 + 5.33 = 9.33
- अतः **संतुलन मूल्य (P) = ₹9.33** तथा **संतुलन मात्रा (Q) = 5.33** इकाइयाँ हैं।

चरण 2: उपभोक्ता अधिशेष की गणना करें

- उपभोक्ता अधिशेष वह त्रिभुजाकार क्षेत्रफल है जो मांग वक्र के नीचे तथा संतुलन मूल्य के ऊपर बनता है।
- उपभोक्ता अधिशेष का सूत्र है: उपभोक्ता अधिशेष $= \frac{1}{2} \times 5.33 \times 10.67$
- जहाँ:
  - **आधार** = संतुलन मात्रा (Q = 5.33)
  - **ऊँचाई** = उपभोक्ताओं द्वारा चुकाने की अधिकतम इच्छा मूल्य (मांग वक्र से, Q = 0 पर P = 20) और संतुलन मूल्य (P = 9.33) के बीच का अंतर।
- अतः **ऊँचाई** है: $20 - 9.33 = 10.67$
- अब **उपभोक्ता अधिशेष** की गणना करें: उपभोक्ता अधिशेष $= \frac{1}{2} \times 5.33 \times 10.67 = 28.42$.

Q5. दो-वस्तु (X और Y) वाले संसार में, यदि मांग की आड़ी लोच धनात्मक है, तो इसका तात्पर्य है कि:
(a) वस्तु X एक निम्नस्तरीय वस्तु है।
(b) वस्तुएँ X और Y पूरक हैं।
(c) वस्तुएँ X और Y स्थानापन्न हैं।
(d) वस्तु X की मांग आय के प्रति बेलोचदार है।
Ans.(c)
Sol. सही विकल्प: C. वस्तुएँ X और Y स्थानापन्न हैं।
व्याख्या:
• मांग की आड़ी लोच एक वस्तु की मांग की गई मात्रा की किसी अन्य वस्तु की कीमत में परिवर्तन के प्रति अनुक्रियाशीलता को मापती है।
• इसका मतलब है कि जब Y की कीमत बढ़ती है, तो X की मांग की गई मात्रा बढ़ जाती है — उपभोक्ता Y से X पर स्विच करते हैं → स्थानापन्न (उदाहरण के लिए, चाय और कॉफी)।
Additional Knowledge:
• **ऋणात्मक आड़ी लोच:** पूरक (उदाहरण के लिए, कार और पेट्रोल)।
• **शून्य आड़ी लोच:** असंबंधित वस्तुएँ।

Q6. भारत में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरआरबी) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
(A) आरआरबी की स्थापना नरसिम्हन कार्य समूह, 1975 की सिफारिश के आधार पर की गई थी।
(B) आरआरबी की इक्विटी का सबसे बड़ा हिस्सा उसके प्रायोजक बैंक के पास होता है।
(C) नाबार्ड आरआरबी की सभी गतिविधियों का समन्वय करता है।
(D) आरआरबी प्रमुख बैंक हैं।
(E) आरआरबी को नाबार्ड के माध्यम से पुनर्वित्त सुविधाएं प्रदान की जाती हैं।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) केवल (A), (C), (E)
(b) केवल (A), (B), (C), (D)
(c) केवल (B), (C), (E)
(d) केवल(A), (E)
Ans.(a)
Sol. सही विकल्प: 1.केवल (A), (C), (E)
स्पष्टीकरण:
क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक (RRB) ग्रामीण क्षेत्रों में, विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों, कृषि मजदूरों और छोटे उद्यमियों को बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करने के लिए स्थापित किए गए थे। वे वाणिज्यिक बैंकों द्वारा प्रायोजन और इक्विटी भागीदारी वाली एक विशिष्ट संरचना के तहत काम करते हैं।
Information Booster:
(A) RRB की स्थापना नरसिम्हन कार्य समूह, 1975 की सिफारिश के आधार पर की गई थी - सही। नरसिम्हन कार्य समूह (1975) ने RRB की स्थापना की सिफारिश की थी।
(C) नाबार्ड RRB की सभी गतिविधियों का समन्वय करता है - सही। नाबार्ड, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों का पर्यवेक्षण, समन्वय और पुनर्वित्त सहायता प्रदान करता है।
(E) क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को नाबार्ड के माध्यम से पुनर्वित्त सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं – सही। नाबार्ड, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को उनकी ऋण गतिविधियों के लिए पुनर्वित्त सहायता प्रदान करता है।
Additional Knowledge:
(B) क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की इक्विटी का सबसे बड़ा हिस्सा उनके प्रायोजक बैंक के पास होता है – गलत। क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की इक्विटी संरचना इस प्रकार है: केंद्र सरकार (50%), प्रायोजक बैंक (35%), राज्य सरकार (15%)। इसलिए, सबसे बड़ा हिस्सा केंद्र सरकार के पास होता है, न कि प्रायोजक बैंक के पास।
(D) क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक अग्रणी बैंक हैं – गलत। लीड बैंक योजना किसी वाणिज्यिक बैंक (जैसे एसबीआई, पीएनबी, आदि) को ज़िले में लीड बैंक के रूप में नामित करती है, न कि क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को।

Q7. रेपो दर वह ब्याज दर है जिस पर:
(a) वाणिज्यिक बैंक RBI से उधार लेते हैं
(b) वाणिज्यिक बैंक अन्य वाणिज्यिक बैंकों से उधार लेते हैं
(c) वाणिज्यिक बैंक RBI में धन जमा करते हैं
(d) आम जनता RBI में धन जमा करते हैं
Ans.(a)
Sol. सही विकल्प: (A) वाणिज्यिक बैंक RBI से उधार लेते हैं
स्पष्टीकरण:
रेपो दर भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) द्वारा उपयोग किया जाने वाला एक प्रमुख मौद्रिक नीति साधन है। "रेपो" का अर्थ पुनर्खरीद समझौता है, जहाँ बैंक RBI से प्रतिभूतियाँ बेचकर, उन्हें बाद में पूर्व निर्धारित मूल्य पर पुनर्खरीद करने के समझौते के साथ धन उधार लेते हैं।
Information Booster:
1. रेपो दर वह दर है जिस पर RBI वाणिज्यिक बैंकों को अल्पकालिक धनराशि उधार देता है।
2. बैंक सरकारी प्रतिभूतियाँ संपार्श्विक के रूप में प्रदान करते हैं।
3. यह बैंकिंग प्रणाली में तरलता का प्रबंधन करने में मदद करता है और RBI की मौद्रिक नीति के रुख का संकेत देता है।
4. रेपो दर में वृद्धि बैंकों के लिए उधार लेना महंगा बनाती है, जिससे मुद्रा आपूर्ति कम हो जाती है; कमी इसके विपरीत होती है।
Additional Knowledge:
1. विकल्प (B) वाणिज्यिक बैंक अन्य वाणिज्यिक बैंकों से उधार लेते हैं → यह कॉल मनी मार्केट को संदर्भित करता है, रेपो दर को नहीं।
2. विकल्प (C) वाणिज्यिक बैंक RBI में धन जमा करते हैं → यह रिवर्स रेपो दर का वर्णन करता है, जहाँ बैंक RBI के पास अतिरिक्त धनराशि जमा करते हैं।
3. विकल्प (D) आम लोग RBI में धन जमा करते हैं → गलत; RBI आम जनता से जमा स्वीकार नहीं करता है।

Q8. भारत में मौद्रिक नीति रुपरेखा को संशोधित और मजबूत करने के लिए 2013 में RBI द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति की अध्यक्षता किसने की थी?
(a) रघुराम राजन
(b) उर्जित पटेल
(c) दीपक मोहंती
(d) माइकल पेट्रा
Ans.(b)
Sol. सही विकल्प: (B)उर्जित पटेल
स्पष्टीकरण:
2013 में, RBI ने भारत में मौद्रिक नीति ढांचे को संशोधित और मजबूत करने के लिए एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया। इस समिति की सिफारिशों के कारण भारत की मौद्रिक नीति संरचना में बड़े बदलाव हुए, जिसमें लचीली मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण (FIT) को अपनाना भी शामिल है।
Information Booster:
1. समिति का गठन सितंबर 2013 में किया गया था।
2. इसकी अध्यक्षता डॉ. उर्जित पटेल ने की, जो उस समय RBI के डिप्टी गवर्नर थे।
3. उर्जित पटेल समिति की रिपोर्ट (2014) ने निम्नलिखित सिफारिशें कीं:
4. मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण को मौद्रिक नीति का प्राथमिक उद्देश्य बनाना।
5. उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) को आधार के रूप में उपयोग करना।
6. ब्याज दर संबंधी निर्णयों के लिए एक मौद्रिक नीति समिति (MPC) की स्थापना करना।
7. इन सिफारिशों को बड़े पैमाने पर लागू किया गया और FIT ढांचे को अपनाने के लिए 2016 में RBI अधिनियम में संशोधन किया गया।
Additional Knowledge:
1. **विकल्प (A) रघुराम राजन** -वह उस समय आरबीआई गवर्नर थे, लेकिन इस विशिष्ट समिति के अध्यक्ष नहीं थे।
2. **विकल्प (C) दीपक मोहंती** -उन्होंने वित्तीय समावेशन पर मध्यम अवधि पथ समिति (2015) की अध्यक्षता की थी, न कि मौद्रिक नीति रूपरेखा समिति की।
3. **विकल्प (D) माइकल पात्रा** -वह वर्तमान में डिप्टी गवर्नर और एमपीसी सदस्य हैं, लेकिन उन्होंने 2013 की समिति की अध्यक्षता नहीं की थी।

Q9. निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(A) M1 = C + DD + OD
(B) M2 = M1 + डाकघर बचत बैंकों में बचत जमा
(C) M3 = M2 + बैंकों की शुद्ध सावधि जमा
(D) M3 = M1 + बैंकों की शुद्ध सावधि जमा
(E) M4 = M1 + डाकघर बचत के साथ कुल जमा
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(a) केवल (A), (B) और (C)
(b) केवल (A), (B) और (D)
(c) केवल (c) और (E)
(d) केवल (B), (D) और (E)
Ans.(b)
Sol. सही विकल्प: 2.केवल (A), (B) और (D)
स्पष्टीकरण:
• भारत में मौद्रिक समुच्चय (M_1, M_2, M_3, M_4) को RBI द्वारा मुद्रा आपूर्ति पर द्वितीय कार्य समूह (1977) की सिफारिशों के आधार पर परिभाषित किया गया है।
• ये परिभाषाएँ तरलता के विभिन्न स्तरों पर मुद्रा आपूर्ति को मापने में मदद करती हैं।
Information Booster:
• **(A) M_1 = C + DD + OD → सही।**
C = जनता द्वारा धारित मुद्रा, DD = बैंकों में माँग जमा, OD = RBI के पास अन्य जमा।
• **(B) M_2 = M_1 + डाकघर बचत बैंकों में बचत जमा → सही।**
• **(D) M_3 = M_1 + बैंकों की शुद्ध सावधि जमा → सही।**
M_3 को व्यापक जमा भी कहा जाता है पैसा।
Additional Knowledge:
• **(C) M_3 = M_2 + बैंकों की शुद्ध सावधि जमाएँ → गलत।**
M_3 = M_1 + शुद्ध सावधि जमाएँ, M_2 नहीं।
• **(E) M_4 = M_1 + डाकघर बचत में कुल जमा → गलत।**
M_4 = M_3 + डाकघर बचत संगठन में कुल जमाएँ (M_1 नहीं)।

Q10. निम्नलिखित में से कौन-सी समितियां भारत में बैंकिंग क्षेत्र सुधारों (Banking Sector Reforms) के लिए स्थापित की गई थीं?
(A) नरसिम्हन समिति
(B) उषा थोराट समिति
(C) नचिकेत मोर समिति
(D) आर. एच. खान समिति
(E) आदित्य पुरी समिति
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) (A), (B), और (C) केवल
(b) (A), (C), और (D) केवल
(c) (B), (D), और (E) केवल
(d) (A), (B), और (D) केवल
Ans.(d)
Sol. Correct Option: 4. (A), (B), और (D) केवल
Explanation:
भारत में बैंकिंग क्षेत्र सुधार RBI और भारत सरकार द्वारा नियुक्त विभिन्न समितियों द्वारा संचालित किए गए हैं। इन समितियों ने वित्तीय स्थिरता, विवेकपूर्ण मानदंड, समावेशन और तकनीकी प्रगति जैसे मुद्दों को संबोधित किया है।

Knowledge Booster:

• (A) नरसिम्हन समिति – 1991 (नरसिम्हन समिति I) और फिर 1998 (नरसिम्हन समिति II) में गठित, इसने पूंजी पर्याप्तता, एनपीए और प्रतिस्पर्धा सहित बैंकिंग क्षेत्र सुधारों की नींव रखी।

• (B) उषा थोराट समिति – 2010 में गठित, इसने भारत में विदेशी बैंकों की उपस्थिति और वित्तीय स्थिरता निहितार्थों की समीक्षा की।

• (D) आर. एच. खान समिति – 2015 में गठित, इसने प्राथमिकता क्षेत्र ऋण (Priority Sector Lending - PSL) दिशानिर्देशों के कामकाज की समीक्षा की, जिसमें विदेशी बैंकों के लिए लक्ष्य भी शामिल थे।

Additional Information:

• (C) नचिकेत मोर समिति – 2013 में गठित, इसने छोटे व्यवसायों और कम आय वाले परिवारों के लिए व्यापक वित्तीय सेवाओं पर ध्यान केंद्रित किया, न कि व्यापक बैंकिंग क्षेत्र सुधारों पर।

• (E) आदित्य पुरी समिति – RBI/सरकार की कोई मानक बैंकिंग सुधार समिति नहीं; आदित्य पुरी HDFC बैंक के एमडी थे, लेकिन उनके नाम पर कोई बड़ी राष्ट्रीय बैंकिंग सुधार समिति नहीं है।

Q11. रोस्टो के अनुसार, कोई भी उद्योग टेक-ऑफ चरण में अग्रणी क्षेत्र की भूमिका निभा सकता है, बशर्ते निम्नलिखित शर्तें पूरी हों।

A. उत्पाद का बाज़ार तेज़ी से बढ़ रहा है

B. अग्रणी क्षेत्र द्वितीयक विस्तार उत्पन्न करता है

C. संप्रदाय के पास निवेशित लाभ से पर्याप्त और निरंतर पूँजी की आपूर्ति होती है।

D. उत्पादकता बढ़ाने के लिए क्षेत्र में नई तकनीकों का परिचय

E. औद्योगिक संरचना में परिवर्तन संरचनात्मक होने चाहिए

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:

(a) केवल B, C, D और E

(b) केवल A, D और E

(c) केवल A, C और D

(d)

केवल A, B, C और D

Ans.(d)

Sol. सही विकल्प: D

स्पष्टीकरण: रोस्टोव के आर्थिक विकास मॉडल के अनुसार, एक "अग्रणी क्षेत्र" "उड़ान भरने" के चरण का एक प्रमुख चालक होता है। किसी क्षेत्र को "अग्रणी क्षेत्र" बनाने वाली परिस्थितियाँ हैं:

• **A. उत्पाद का बाज़ार तेज़ी से बढ़ रहा है:** यह उस क्षेत्र के विकास और अन्य क्षेत्रों को अपने साथ जोड़ने के लिए आवश्यक है।

• **B. अग्रणी क्षेत्र द्वितीयक विस्तार उत्पन्न करता है:** यह **पश्चगामी और अग्रगामी संपर्कों** के निर्माण को संदर्भित करता है, जहाँ अग्रणी क्षेत्र उन उद्योगों में वृद्धि को प्रोत्साहित करता है जो उसे आपूर्ति करते हैं (पश्चगामी) और उन उद्योगों में जो उसके उत्पादों का उपयोग करते हैं (अग्रगामी)।

• **C. इस क्षेत्र में वापस लगाए गए मुनाफे से पूंजी की पर्याप्त और निरंतर आपूर्ति होती है:** इस क्षेत्र को आत्मनिर्भर होना चाहिए, अपना निवेश स्वयं उत्पन्न करना चाहिए।

• **D. उत्पादकता बढ़ाने के लिए क्षेत्र में नई तकनीकों का समावेश:** तकनीकी नवाचार विकास का एक महत्वपूर्ण घटक है।

Information Booster:

• **रोस्टो के आर्थिक विकास के चरण:** विकास का एक ऐतिहासिक मॉडल जो पाँच चरणों की पहचान करता है: पारंपरिक समाज, विकास की पूर्व शर्तें, विकास, परिपक्वता की ओर गति, और उच्च जन उपभोग का युग।

Additional Knowledge:

• "अग्रणी क्षेत्र" की अवधारणा "विकास" चरण के केंद्र में है, जिसे तीव्र, आत्मनिर्भर औद्योगिक विकास की अवधि के रूप में वर्णित किया गया है। इस क्षेत्र में वृद्धि इन संबंधों के माध्यम से अर्थव्यवस्था के अन्य भागों तक फैलती है।

Q12. निम्नलिखित संकटों को कालानुक्रमिक क्रम (सबसे पुराने से शुरू करते हुए) में व्यवस्थित करें।

A. ओपेक तेल संकट

B. अंतर्राष्ट्रीय ऋण संकट

C. पूर्वी एशियाई वित्तीय संकट

D. अर्जेंटीना आर्थिक संकट

E. यूरोज़ोन संकट

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) A, B, C, D, E

(b) A, B, c, E, D

(c) A, B, E, C, D

(d) A, E, B, C, D

Ans.(a)

Sol. Correct Option: A [A, B, C, D, E]

Explanation:

सबसे पुराने से लेकर सबसे हाल के संकटों का सही कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है:

- **A. ओपेक तेल संकट – 1973** (ओपेक देशों द्वारा प्रतिबंध लगाने से उत्पन्न पहला तेल संकट)।
- **B. अंतर्राष्ट्रीय ऋण संकट - 1982** (यह तब शुरू हुआ जब मेक्सिको ने अपने संप्रभु ऋण पर चूक की, जिससे लैटिन अमेरिकी ऋण संकट शुरू हो गया)।
- **C. पूर्वी एशियाई वित्तीय संकट - 1997** (थाईलैंड में थाई बाट के पतन के साथ शुरू हुआ और पूरे पूर्वी एशिया में फैल गया)।
- **D. अर्जेंटीना आर्थिक संकट - 2001** (अर्जेंटीना का अपने सार्वजनिक ऋण पर चूक और गंभीर आर्थिक मंदी)।
- **E. यूरोज़ोन संकट - 2009** (ग्रीक ऋण संकट के साथ शुरू हुआ और अन्य यूरोज़ोन देशों में फैल गया)।

Information Booster:

- ओपेक तेल संकट (1973): वैश्विक ऊर्जा संकट, उच्च मुद्रास्फीति और आर्थिक स्थिरता ('स्टैगफ्लेशन') का कारण बना।
- अंतर्राष्ट्रीय ऋण संकट (1982): मुख्य रूप से लैटिन अमेरिकी देशों को प्रभावित किया, जिससे विकास का एक 'खोया हुआ दशक' हुआ।
- पूर्वी एशियाई वित्तीय संकट (1997): थाईलैंड, इंडोनेशिया और दक्षिण कोरिया जैसे देशों में भारी मुद्रा अवमूल्यन, बैंक विफलताएँ और मंदी आई।
- अर्जेंटीना आर्थिक संकट (2001): इसके परिणामस्वरूप संप्रभु ऋण ऋण चूक, बैंकों पर रोक और सामाजिक अशांति हुई।
- यूरोज़ोन संकट (2009): ग्रीस, आयरलैंड, पुर्तगाल, स्पेन और साइप्रस में संप्रभु ऋण संकट उत्पन्न हुआ, जिससे यूरो मुद्रा संघ को खतरा पैदा हो गया।

Additional Knowledge:

- विकल्प 2 (A, B, C, E, D) गलत है क्योंकि यूरोज़ोन संकट (2009) अर्जेंटीना संकट (2001) के बाद हुआ था।
- विकल्प 3 (A, B, E, C, D) गलत है क्योंकि यूरोज़ोन संकट (2009) पूर्वी एशियाई संकट (1997) से पहले आता है।
- विकल्प 4 (A, E, B, C, D) पूरी तरह से क्रम से बाहर है।

Q13. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें:

सूची-I	**सूची-** II
(A) PQLI	(I) अमर्त्य सेन
(B) HDI	(II) महबूब-उल-हक
(C) विकास के लिए क्षमता दृष्टिकोण	(III) अल्किरे और फोस्टर
(D) बहुआयामी गरीबी सूचकांक	(IV) मॉरिस डी. मॉरिस

निम्नलिखित में से सही कोड चुनें:

(a) (A)-(IV), (B)-(II), (C)-(I), (D)-(III)

(b) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(I)

(c) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(IV)

(d) (A)-(I), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(IV)

Ans.(a)

Sol. सही विकल्प (A)

Information Booster:

1.

PQLI (A), या जीवन की भौतिक गुणवत्ता सूचकांक, **मॉरिस डी. मॉरिस (IV)** से संबंधित है। इसे किसी देश के जीवन की गुणवत्ता या कल्याण को मापने के लिए शुरू किया गया था, जिसमें जीवन प्रत्याशा, शिशु मृत्यु दर और बुनियादी साक्षरता पर ध्यान केंद्रित किया गया था।

2.

एचडीआई (बी), या मानव विकास सूचकांक, **महबूब-उल-हक (III)** द्वारा विकसित किया गया था और यह जीवन प्रत्याशा, शिक्षा और प्रति व्यक्ति आय संकेतकों का एक संयुक्त आँकड़ा है, जिसका उपयोग देशों को मानव विकास के चार स्तरों में वर्गीकृत करने के लिए किया जाता है।

3.

विकास के लिए क्षमता दृष्टिकोण (सी)अमर्त्य सेन (I) द्वारा विकसित किया गया था, जिन्होंने तर्क दिया था कि विकास का उद्देश्य केवल आर्थिक संपदा में वृद्धि करना नहीं, बल्कि व्यक्तियों की क्षमताओं को बढ़ाना और उनकी स्वतंत्रता का विस्तार करना होना चाहिए।

4. **बहु-आयामी गरीबी सूचकांक (D)अल्किरे और फोस्टर (II)** से जुड़ा है, जिन्होंने इस सूचकांक को गरीबी के एक ऐसे माप के रूप में विकसित किया है जो शिक्षा, जीवन स्तर और स्वास्थ्य में विभिन्न अभावों को दर्शाता है।

Q14. निम्नलिखित व्यापार चक्रों को उनकी अनुमानित अवधि के संदर्भ में आरोही क्रम में व्यवस्थित करें।

A. कोंड्राटिएव चक्र

B. किचिन चक्र

C. जुगलर चक्र

D. कुज्नेट्स चक्र

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें

(a) C, B, A, D

(b) B, C, D, A

(c) A, C, B, D

(d) D, A, C, B

Ans.(b)

Sol. सही उत्तर: (b) B, C, D, A

स्पष्टीकरण: अर्थशास्त्र में व्यापार चक्रों को उनकी अवधि और उन्हें ट्रिगर करने वाले विशिष्ट आर्थिक कारकों के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। **जोसेफ शुम्पीटर** ने इन विभिन्न चक्रों को एक ही ढांचे में एकीकृत करने के लिए प्रसिद्ध हैं।

Information Booster:

· **किचिन चक्र (B):** यह सबसे छोटा चक्र है, जो आमतौर पर **3 से 5 वर्ष** तक रहता है। यह मुख्य रूप से **इन्वेंट्री निवेश** में उतार-चढ़ाव और व्यवसायों द्वारा समायोजन के कारण होता है।

· **जुगलर चक्र (C):** इसे अक्सर वास्तविक व्यापार चक्र कहा जाता है, यह लगभग **7 से 11 वर्ष** तक रहता है। यह **स्थिर पूंजी निवेश** (जैसे मशीनरी और कारखाने) में उतार-चढ़ाव से जुड़ा है।

· **कुज्नेट्स चक्र (D):15 से 25 वर्ष** के बीच चलने वाले ये "लंबे उतार-चढ़ाव" हैं जो **बुनियादी ढांचे के निवेश**, भवन निर्माण चक्र और जनसांख्यिकीय परिवर्तनों से जुड़े हैं।

· **कोंड्राटिएव चक्र (A):** इन्हें "लंबी तरंगों" के रूप में भी जाना जाता है, ये चक्र **40 से 60 वर्ष** तक चलते हैं। ये प्रमुख **तकनीकी नवाचारों** (जैसे भाप की शक्ति, बिजली, या सूचना प्रौद्योगिकी) द्वारा संचालित होते हैं जो अर्थव्यवस्था को मौलिक रूप से नया आकार देते हैं।

Additional Knowledge:

चक्र का प्रकार	**अर्थशास्त्री**
1. कोंड्राटिएव चक्र	निकोलाई कोंड्राटिएव (1920)
2. किचिन चक्र	जोसेफ किचिन (1923)
3. जुगलर चक्र	क्लेमेंट जुगलर
4. कुज्नेट्स चक्र	साइमन कुज्नेट्स

Q15. सूची I का सूची II से मिलान करें

सूची I	सूची I I
A. विशिष्ट कारक मॉडल	I. प्रीबिश-सिंगर परिकल्पना
B. विकास को सीमित करना	II. थॉमस मुन
C. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का व्यापारिक सिद्धांत	III. जगदीश भगवती
D. व्यापार की शर्तों में धर्मनिरपेक्ष गिरावट	IV. पॉल सैमुएलसन और रोनाल्ड जोन्स

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) A-III, B-IV, C-II, D-I

(b) A-IV, B-III, C-II, D-I

(c) A-IV, B-II, C-III, D-I

(d) A-II, B-IV, C-I, D-III

Ans.(b)

Sol. सही विकल्प: B [A-IV, B-III, C-II, D-I]

Information Booster:

• A.**विशिष्ट कारक मॉडल:** यह मॉडल **पॉल सैमुएलसन और रोनाल्ड जोन्स** द्वारा विकसित किया गया था। यह व्यापार के कारक आय पर पड़ने वाले प्रभावों की व्याख्या करता है, यह मानते हुए कि कुछ कारक अल्पावधि में कुछ उद्योगों के लिए विशिष्ट होते हैं।

• B. **विकास को अवरूद्ध करना:** यह अवधारणा, जिसके अनुसार किसी देश की आर्थिक वृद्धि उसके व्यापार और राष्ट्रीय कल्याण की दृष्टि से गिरावट का कारण बन सकती है, जगदीश भगवती द्वारा विकसित की गई थी।

• C.**व्यापारवाद** एक आर्थिक सिद्धांत है जो किसी देश द्वारा अपने निर्यात को अधिकतम और आयात को न्यूनतम करने की वकालत करता है। **थॉमस मुन**एक प्रमुख अंग्रेजी व्यापारीवादी लेखक थे।

• D.**व्यापार की शर्तों में धर्मनिरपेक्ष गिरावट:** यह परिकल्पना है कि विकासशील देशों के लिए व्यापार की शर्तें समय के साथ घटती जाती हैं। यह विचार **प्रीबिश-सिंगर परिकल्पना से जुड़ा है।**

Additional Knowledge:

• **विशिष्ट कारक मॉडल**, रिकार्डियन और हेक्शर-ओहलिन मॉडल का एक विस्तार है, जो गतिशील और अचल कारकों के मिश्रण की अनुमति देकर एक अधिक यथार्थवादी अल्पकालिक ढाँचा प्रदान करता है। यह व्यापार के अल्पकालिक वितरणात्मक प्रभावों की व्याख्या करने के लिए उपयोगी है।

• **विकास को अवमूल्यन करने** की अवधारणा इस विचार का एक शक्तिशाली प्रतिवाद है कि आर्थिक विकास हमेशा लाभकारी होता है। यह व्यापार के संभावित नकारात्मक परिणामों पर प्रकाश डालता है, विशेष रूप से बड़े देशों के लिए जो विश्व कीमतों को प्रभावित कर सकते हैं।

• **व्यापारवाद** ने 16वीं से 18वीं शताब्दी तक आर्थिक चिंतन पर अपना दबदबा बनाए रखा। यह आधुनिक आर्थिक चिंतन का अग्रदूत था और बाद में एडम स्मिथ जैसे शास्त्रीय अर्थशास्त्रियों, जिन्होंने मुक्त व्यापार की वकालत की, ने इसकी आलोचना की।

• **प्रीबिश-सिंगर परिकल्पना** विकास अर्थशास्त्र में बहस का एक प्रमुख विषय रही है, कुछ अनुभवजन्य साक्ष्य इसका समर्थन करते हैं और अन्य अध्ययन इसके विपरीत सुझाव देते हैं। यह एक "नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था" और विकासशील देशों को अपने निर्यात में विविधता लाने में मदद करने वाली नीतियों के आह्वान का आधार रही है।

Q16. विकास के गरीबी-भारित सूचकांक के निर्माण का विचार क्या है?

(a) समाज के सभी आय वर्गों को कम से कम समान महत्व देना

(b) ऊंचाई वृद्धि दर हासिल करने के लिए।

(c) समान आधार पर विदेशी व्यापार को सुविधाजनक बनाना।

(d) सबसे अमीर आबादी के आय समूह को अधिक मूल्य या भार देना तथा निम्न आय समूह को कोई भार नहीं देना।

Ans.(a)

Sol. सही विकल्प: A (समाज के सभी आय वर्गों को कम से कम समान महत्व देना।)

स्पष्टीकरण: "विकास के गरीबी-भारित सूचकांक" की अवधारणा आर्थिक विकास को मापने का एक वैकल्पिक तरीका है जो केवल समग्र सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर को देखने से कहीं आगे जाता है।

Information Booster:

• विकास सूचकांक की गणना करते समय अमीरों की तुलना में गरीबों की आय वृद्धि को अधिक महत्व देने का विचार है। लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि आर्थिक विकास गरीबों के पक्ष में और समावेशी हो, न कि केवल अमीरों तक ही सीमित रहे।

• यह दृष्टिकोण पारंपरिक विकास उपायों के बिल्कुल विपरीत है, जो आय के प्रत्येक रुपये को समान महत्व देते हैं, चाहे वह किसी को भी प्राप्त हो।। इसका अर्थ है कि एक अमीर व्यक्ति के लिए विकास का एक रुपया उतना ही महत्व रखता है जितना एक गरीब व्यक्ति के लिए विकास का एक रुपया। गरीबी-भारित सूचकांक का उद्देश्य इसे ठीक करना है।

Additional Knowledge:

• यह अवधारणा पारंपरिक जीडीपी-आधारित विकास मेट्रिक्स की सीमाओं को दूर करने के लिए विकसित की गई थी, जो बढ़ती असमानता को छिपा सकती हैं। यह एक मानक उपाय है जो सामाजिक मूल्य निर्णय को दर्शाता है।

Q17. निम्नलिखित प्रकाशनों को सबसे पुराने से नवीनतम तक कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें।

A. आर्थर लुईस द्वारा "आर्थिक विकास का सिद्धांत"

B. रॉबर्ट सोलो द्वारा "आर्थिक विकास के सिद्धांत में योगदान"

C. वॉल्ट द्वारा "आर्थिक विकास के चरण: एक गैर-साम्यवादी घोषणापत्र" रोस्टोव

D. “एशियाई नाटक: राष्ट्रों की गरीबी की पड़ताल” गुन्नार मायर्डल द्वारा

E. “आर्थिक विकास की रणनीति” अल्बर्ट हिर्शमैन द्वारा

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) A, E, B, C, D
(b) E, B, C, D, A
(c) C, D, B, E, A
(d) A, B, E, C, D
Ans.(d)
Sol. सही उत्तर: D [A, B, E, C, D]
स्पष्टीकरण:
प्रकाशनों का सही कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है:
• सबसे पुराना प्रकाशन आर्थर लुईस (A) द्वारा लिखित "आर्थिक विकास का सिद्धांत" (1955) है।
• इसके बाद रॉबर्ट सोलो की "आर्थिक विकास के सिद्धांत में योगदान" (1956) (बी)।
• अल्बर्ट हिर्शमैन द्वारा लिखित "आर्थिक विकास की रणनीति" अगली बार 1958 (ई) में प्रकाशित हुई।
• वाल्ट रोस्टो की "आर्थिक विकास के चरण" 1960 (सी) में प्रकाशित हुई।
• अंततः, गुन्नार मायर्डल का "एशियन ड्रामा" 1968 (डी) में प्रकाशित हुआ।
Additional Information:
1. आर्थर लुईस का "आर्थिक विकास का सिद्धांत" कृषि अर्थव्यवस्थाओं से औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं में बदलाव पर ध्यान केंद्रित करते हुए, दोहरी अर्थव्यवस्था मॉडल पर ज़ोर दिया गया।
2. रॉबर्ट सोलोव के "आर्थिक विकास के सिद्धांत में योगदान" ने सोलोव विकास मॉडल प्रस्तुत किया, जो तकनीकी प्रगति और पूंजी संचय को एकीकृत करता है।
3. अल्बर्ट हिर्शमैन के "आर्थिक विकास की रणनीति" पर काम ने रणनीतिक निवेश और आर्थिक विकास में "संबंधों" के महत्व की वकालत की।
4. वॉल्ट रोस्टो के "आर्थिक विकास के चरण" ने विकास के चरणों का एक मॉडल प्रस्तावित किया जहाँ देश पारंपरिक समाजों से आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं में संक्रमण करते हैं।
5. गुन्नार मायर्डल का "एशियाई नाटक" गरीबी और विकास से उत्पन्न चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए, एशियाई देशों के सामाजिक-आर्थिक विकास का विश्लेषण किया।

Q18. पुस्तक का शीर्षक है. "राष्ट्र विफल क्यों होते हैं: शक्ति की उत्पत्ति। समृद्धि और गरीबी" किसके द्वारा लिखी गई है?
(a) अभिजीत बनर्जी
(b) डारोन एसेमोग्लू और जेम्स ए रॉबिन्सन
(c) अमर्त्य सेन
(d) जोसेफ स्टिग्लिट्ज़
Ans.(b)
Sol. Correct Option: B. डैरन ऐसमोग्लू और जेम्स ए. रॉबिन्सन
Explanation:
पुस्तक 'व्हाई नेशंस फेल: द ओरिजिन्स ऑफ पावर, प्रॉसपेरिटी एंड पॉवर्टी' (2012) विकास अर्थशास्त्र और राजनीतिक अर्थव्यवस्था में एक प्रभावशाली कार्य है, जिसमें तर्क दिया गया है कि समावेशी राजनीतिक और आर्थिक संस्थाएं दीर्घकालिक समृद्धि की कुंजी हैं, जबकि शोषक संस्थाएं विफलता का कारण बनती हैं।
Information Booster:
1. लेखक: डैरन ऐसमोग्लू (एमआईटी अर्थशास्त्री) और जेम्स ए. रॉबिन्सन (राजनीति वैज्ञानिक)।
2. केंद्रीय थीसिस: "समावेशी आर्थिक संस्थाएँ" नवाचार और विकास को बढ़ावा देती हैं; "शोषणकारी संस्थाएँ" विकास में बाधा डालती हैं।
3. तुलनात्मक केस स्टडीज़ का उपयोग करता है (उदाहरण के लिए, उत्तर बनाम दक्षिण कोरिया, नोगेल्स एरिज़ोना बनाम नोगेल्स मेक्सिको)।
4. केवल भूगोल, संस्कृति या अज्ञानता पर आधारित सिद्धांतों के साथ तुलना करता है।
Additional Knowledge:
1. विकल्प A (अभिजीत बनर्जी): गुड इकोनॉमिक्स फॉर हार्ड टाइम्स एंड पुअर इकोनॉमिक्स (एस्तेर डुफ्लो के साथ) के सह-लेखक।
2. विकल्प C (अमर्त्य सेन): डेवलपमेंट ऐज़ फ़्रीडम, द आइडिया ऑफ़ जस्टिस लिखा।
3. विकल्प D (जोसेफ स्टिग्लिट्ज़): ग्लोबलाइज़ेशन एंड इट्स डिसकंटेंट्स, द प्राइस ऑफ़ इनइक्वलिटी लिखा।

Q19. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के उत्पाद चक्र मॉडल में, किस चरण में नकल करने वाला देश तीसरे बाजारों में नवप्रवर्तन करने वाले देश को कम कीमत पर बेचना शुरू कर देता है?

(a) चरण -II

(b) चरण -III

(c) चरण -IV

(d) चरण -V

Ans.(c)

Sol. Correct Answer: C [चरण III]

Explanation

रेमंड वर्नन द्वारा विकसित उत्पाद चक्र मॉडल अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में किसी उत्पाद के जीवन चक्र के चरणों को रेखांकित करता है, जो आमतौर पर नवाचार करने वाले और अनुकरण करने वाले देशों के बीच की गतिशीलता पर केंद्रित होता है।

Information Booster:

• उत्पाद चक्र मॉडल यह बताता है कि किसी उत्पाद के विकास के साथ व्यापार के पैटर्न कैसे विकसित होते हैं, नवाचार से लेकर अनुकरण और अंततः वस्तुकरण तक।

• चरण-III में, अनुकरण करने वाला देश तीसरे बाज़ारों में निर्यात करना शुरू कर देता है, जहाँ सस्ते श्रम या अधिक कुशल उत्पादन विधियों के कारण वही उत्पाद कम कीमत पर उपलब्ध होता है।

• यह चक्र दर्शाता है कि उत्पादों के नवाचार से मानकीकरण और व्यापक उत्पादन की ओर बढ़ने के साथ वैश्विक व्यापार कैसे बदलता है।

Additional Information:

• **चरण-I:** नवाचार करने वाला देश (आमतौर पर विकसित) उत्पाद विकसित करता है और उसे घरेलू बाज़ार में पेश करता है।

• **चरण-II:** फिर उत्पाद को अन्य विकसित देशों, आमतौर पर समान आय स्तर वाले देशों को निर्यात किया जाता है।

• **चरण-IV:** नकल करने वाला देश अपनी तकनीक में सुधार जारी रखता है और उत्पाद वस्तु बन सकता है, जिससे नवाचार करने वाले देश के लिए अपनी बाज़ार हिस्सेदारी बनाए रखना और मुश्किल हो जाता है।

• **चरण-V:** उत्पाद अब परिपक्व हो चुका है और नकल करने वाला देश इसका उत्पादन और निर्यात विभिन्न अंतरराष्ट्रीय बाज़ारों में करता है, संभवतः मूल नवाचार करने वाले देश के बाज़ार पर कब्ज़ा कर लेता है।

Q20. निम्नलिखित सिद्धांतों को सबसे पुराने से लेकर सबसे नए तक सही कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:

(A) पैटिनकिन का वास्तविक संतुलन प्रभाव

(B) मुद्रा का पुनर्गठित मात्रा सिद्धांत

(C) बाउमोल का मुद्रा सिद्धांत

(D) नकद लेनदेन दृष्टिकोण

(E) नकद शेष दृष्टिकोण

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) (D), (E), (B), (C), (A)

(b) (E), (D), (A), (B), (C)

(c) (E), (D), (C), (B), (A)

(d) (C), (D), (E), (A), (B)

Ans.(a)

Sol. सही विकल्प: 1 (D), (E), (B), (C), (A)

स्पष्टीकरण:

• मुद्रा के सिद्धांत विशुद्ध रूप से विनिमय के माध्यम के रूप में शास्त्रीय दृष्टिकोण से विकसित होकर आधुनिक सिद्धांतों तक पहुँचे हैं, जो मुद्रा को मूल्य के संचय और एक व्यापक परिसंपत्ति पोर्टफोलियो के हिस्से के रूप में देखते हैं।

• यह विकास इरविंग फिशर के शास्त्रीय समीकरण से शुरू होता है और कैम्ब्रिज स्कूल के माध्यम से होता हुआ कीन्स-पश्चात और मुद्रावादी विकास की ओर बढ़ता है।

Information Booster:

• **नकद लेनदेन दृष्टिकोण (D):** इसे **इरविंग फिशर** द्वारा 'द परचेजिंग पावर ऑफ मनी' (1911) में प्रस्तावित किया गया था। यह लेनदेन में मुद्रा के वेग (MV=PT) पर केंद्रित था।

• **नकद शेष दृष्टिकोण (E):** इसे **कैम्ब्रिज अर्थशास्त्रियों** (मार्शल, पिगू) द्वारा औपचारिक रूप से 1917 के आसपास विकसित किया गया था (पिगू की 'द वैल्यू ऑफ मनी')। इसने ध्यान मुद्रा शेष रखने की मांग (M=kPY) पर स्थानांतरित कर दिया।
• **पुनर्गठित परिमाण सिद्धांत (B):** इसे **मिल्टन फ्रीडमैन** द्वारा 1956 में प्रस्तावित किया गया था ('मुद्रा का परिमाण सिद्धांत: एक पुनर्कथन')। उन्होंने मुद्रा की मांग को एक पोर्टफोलियो विकल्प के रूप में माना, जो लेनदेन के दृष्टिकोण से अलग था।
• **बोमोल का मुद्रा सिद्धांत (C):** इसे विलियम जे. बोमोल द्वारा 1952 में प्रस्तावित किया गया था। इसने मुद्रा की लेनदेन मांग के लिए इन्वेंट्री सैद्धांतिक दृष्टिकोण लागू किया, जिसे अक्सर कीन्स-पश्चात सुधारों के साथ जोड़ा जाता है।
• **पेटिनकिन का वास्तविक शेष प्रभाव (A):** इसे डॉन पेटिनकिन द्वारा 'मनी, इंटरेस्ट एंड प्राइसेस' (1956) में विस्तार से समझाया गया था। इसने मौद्रिक और मूल्य सिद्धांत को एकीकृत किया, यह दिखाते हुए कि वास्तविक शेष कुल मांग को कैसे प्रभावित करते हैं।

Additional Knowledge:

• **प्रवाह बनाम स्टॉक:** फिशर का दृष्टिकोण (D) एक **प्रवाह (flow)** अवधारणा है (गतिशील मुद्रा), जबकि कैम्ब्रिज दृष्टिकोण (E) एक **स्टॉक** अवधारणा है (स्थिर/रखी हुई मुद्रा)।
• **वास्तविक शेष प्रभाव:** पेटिनकिन ने इस तंत्र का उपयोग यह तर्क देने के लिए किया कि मूल्य स्तर में गिरावट मुद्रा जोत के वास्तविक मूल्य को बढ़ाती है, जिससे खपत को प्रोत्साहन मिलता है और पूर्ण रोजगार बहाल होता है, जो "तरलता जाल" का मुकाबला करता है।

B और C पर ध्यान दें: हालांकि बोमोल (1952) कालानुक्रमिक रूप से फ्रीडमैन (1956) से पहले हैं, विकल्प (1) फ्रीडमैन (B) को बोमोल (C) से पहले रखता है। बहुविकल्पीय परीक्षाओं में, व्यक्ति को "सबसे उपयुक्त" विकल्प चुनना चाहिए जो प्राथमिक कालानुक्रमिक आधारों (फिशर → \rightarrow → कैम्ब्रिज) का सम्मान करता हो।

Q21. सूची I का सूची II से मिलान करें:

सूची I (मौद्रिक नीति व्यवस्था)	सूची II (अवधि)
A. राजकोषीय प्रभुत्व	I. 2016 के बाद
B. बहु-सूचक दृष्टिकोण	II. 1951-1985
C. फीडबैक के साथ मौद्रिक लक्ष्यीकरण	III. 1998-2016
D. लचीला मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण	IV. 1985-1998

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) A-III, B-IV, C-II, D-I
(b) A-II, B-III, C-IV, D-I
(c) A-II, B-I, C-IV, D-III
(d) A-IV, B-III, C-I, D-II

Ans.(b)

Sol. सही विकल्प : B [A-II, B-III, C-IV, D-I]

स्पष्टीकरण:

भारत में मौद्रिक नीति व्यवस्थाओं का उनके संबंधित कालखंडों के साथ मिलान इस प्रकार है:

• **A. राजकोषीय प्रभुत्व** → II. 1951-1985
• **B. बहु-सूचक दृष्टिकोण** → III. 1998-2016
• **C. फीडबैक के साथ मौद्रिक लक्ष्यीकरण** → IV. 1985-1998
• **D. लचीला मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण** → I. 2016 से आगे

Information Booster::

• **राजकोषीय प्रभुत्व (1951-1985):** आरबीआई से उच्च सरकारी उधारी की विशेषता, जिससे मुद्रास्फीति का दबाव बढ़ता है।
• **प्रतिक्रियाओं के साथ मौद्रिक लक्ष्यीकरण (1985-1998):** विकास आवश्यकताओं के लिए लचीलेपन के साथ, मुद्रास्फीति को कम करने के लिए मुद्रा आपूर्ति को नियंत्रित करने के उद्देश्य से।
• **बहु-सूचक दृष्टिकोण (1998-2016):** अधिक समग्र नीति मूल्यांकन के लिए संकेतकों के एक व्यापक सेट में स्थानांतरित।
• **लचीला मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण (2016 से आगे):** द्वारा औपचारिक रूप दिया गया मौद्रिक नीति ढाँचा समझौते के तहत, मूल्य स्थिरता को मुख्य लक्ष्य बनाया गया है।

Additional Knowledge:

• विकल्प 1 (A-III, B-IV, C-II, D-I) गलत है क्योंकि यह राजकोषीय प्रभुत्व और मौद्रिक लक्ष्यीकरण को गलत तरीके से दर्शाता है।
• विकल्प 3 (A-II, B-I, C-IV, D-III) गलत है क्योंकि बहु-सूचक दृष्टिकोण 2016 में शुरू नहीं हुआ था।

• विकल्प 4 (A-IV, B-III, C-I, D-II) गलत है क्योंकि लचीला मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण 2016 में शुरू हुआ था, इससे पहले नहीं।

Q22. _____ प्रभाव का तात्पर्य यह है कि जब मुद्रास्फीति अधिक होती है तो नाममात्र ब्याज दरें उच्च होती हैं और जब मुद्रास्फीति कम होती है तो कम होती हैं?

(a) टोबिन प्रभाव
(b) बॉमोल प्रभाव
(c) फिशर प्रभाव
(d) पैटिंकिन प्रभाव

Ans.(c)

Sol. सही उत्तर (c)

स्पष्टीकरण: **फिशर प्रभाव** नाममात्र ब्याज दरों, वास्तविक ब्याज दरों और मुद्रास्फीति के बीच संबंध की व्याख्या करता है। **फिशर प्रभाव** मुद्रास्फीति और नाममात्र ब्याज दरों के बीच संबंध का सही वर्णन करता है। जैसे-जैसे मुद्रास्फीति बढ़ती है, वास्तविक ब्याज दर को बनाए रखने के लिए नाममात्र दरें बढ़ती हैं।

सूचना वर्धक: इस सिद्धांत के अनुसार, मुद्रास्फीति अधिक होने पर नाममात्र ब्याज दरें अधिक होती हैं और मुद्रास्फीति कम होने पर कम होती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि नाममात्र ब्याज दर वास्तविक ब्याज दर और अपेक्षित मुद्रास्फीति का योग होती है। जब मुद्रास्फीति बढ़ती है, तो ऋणदाता अपने वांछित वास्तविक प्रतिफल को बनाए रखने के लिए उच्च नाममात्र ब्याज दर की मांग करते हैं, जिसके कारण मुद्रास्फीति के साथ नाममात्र दरें भी बढ़ती हैं। इसके विपरीत, जब मुद्रास्फीति कम होती है, तो नाममात्र ब्याज दरें भी कम हो जाती हैं।

Additional Knowledge:

टोबिन प्रभाव, विशेष रूप से पोर्टफोलियो विविधीकरण के संदर्भ में, परिसंपत्तियों की मांग पर ब्याज दरों के प्रभाव को संदर्भित करता है। इसका मुद्रास्फीति और नाममात्र ब्याज दरों के बीच संबंध से कोई संबंध नहीं है।

बॉमोल प्रभाव, नकदी रखने की लागत और व्यक्तियों एवं फर्मों द्वारा नकदी शेषों के प्रबंधन पर केंद्रित है। यह मुद्रास्फीति और नाममात्र ब्याज दरों के बीच संबंध की व्याख्या नहीं करता है।

पैटिंकिन प्रभाव एक आर्थिक सिद्धांत है जो किसी अर्थव्यवस्था में आय, उपभोग और तरलता के बीच संबंध से संबंधित है। यह मुद्रास्फीति और नाममात्र ब्याज दरों के बीच संबंध की व्याख्या नहीं करता है।

Q23. निम्नलिखित सिद्धांतों को सबसे पुराने से लेकर नवीनतम तक सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:

(A) अवशोषण दृष्टिकोण
(B) कारक मूल्य समकारी सिद्धांत
(C) पारस्परिक डंपिंग मॉडल
(D) लियोन्टीफ विरोधाभास
(E) इमिसराइजिंग ग्रोथ सिद्धांत

निम्नलिखित में से सही कोड चुनें;

(a) (B), (A), (D), (E), (C)
(b) (D), (A), (B), (C), (E)
(c) (E), (D), (B), (A), (C)
(d) (D), (A), (C), (E), (B)

Ans.(a)

Sol. सही उत्तर: (A)

सिद्धांतों को कालानुक्रमिक क्रम में निम्नानुसार व्यवस्थित किया गया है:

• (B) कारक मूल्य समकारी सिद्धांत: 1940 का दशक: यह सिद्धांत 1948 में सैमुएलसन द्वारा प्रस्तुत किया गया था, जिसमें सुझाव दिया गया था कि मुक्त व्यापार के साथ, दो व्यापारिक देशों में कारक मूल्य (मजदूरी, किराया, आदि) समान हो जाएँगे।

• (A) अवशोषण दृष्टिकोण: 1950 का दशक: अवशोषण दृष्टिकोण 1952 में लियोन्टीफ विरोधाभास के लगभग उसी समय विकसित किया गया था और यह समझाया गया था कि व्यापार असंतुलन राष्ट्रीय आय और उत्पादन को कैसे प्रभावित करते हैं।

• (D) लियोन्टीफ विरोधाभास: 1950 का दशक: वासिली लियोन्टीफ ने 1953 में यह विरोधाभास प्रस्तुत किया, जिससे पता चला कि अमेरिका पूँजी-समृद्ध होने के बावजूद, श्रम-प्रधान वस्तुओं का निर्यात कर रहा था, जो कारक बंदोबस्ती सिद्धांत का खंडन करता था।

• (E) विकास में कमी का सिद्धांत: 1958: यह जगदीश भगवती द्वारा प्रस्तावित यह सिद्धांत 1958 में सामने आया और यह बताता है कि जब व्यापार की स्थितियाँ बिगड़ती हैं, तो विकास के कारण किसी देश के कल्याण में कैसे गिरावट आ सकती है।
• (C) पारस्परिक डंपिंग मॉडल: पॉल क्रुगमैन ने 1983 में पारस्परिक डंपिंग मॉडल प्रस्तुत किया, जो बताता है कि कैसे दो देश समान लागतों के बावजूद व्यापार में संलग्न हो सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप "डंपिंग" (घाटे पर बिक्री) होती है।

Q24. वित्त आयोग के निम्नलिखित अध्यक्षों को उनकी नियुक्ति के क्रम में, सबसे वरिष्ठ से शुरू करते हुए, व्यवस्थित करें।
A. ए. एम. खुर्शो
B. सी. रंगराजन
C. एन. के. पी. साल्वे
D. के. ब्रह्मानंद रेड्डी
E. के. सी. पंत
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) A, C, E, D, B
(b) C, E, A, D, B
(c) B, D, E, C, A
(d) D, C, E, A, B
Ans.(d)
Sol. सही विकल्प : 4 [D,C, E, A, B]
सूचना बूस्टर:
• **D** के.सी. ब्रह्मानंद रेड्डी : छठे वित्त आयोग के अध्यक्ष (1972)
• **C** एन.के.पी साल्वे : 9वें वित्त आयोग के अध्यक्ष (1987)
• **E.** के.सी. पंत : 10वें वित्त आयोग के अध्यक्ष (1995)
• **A.** एम. खुसरो : 11वें वित्त आयोग के अध्यक्ष (2000)
• **B.** सी. रंगराजन: 12वें वित्त आयोग के अध्यक्ष (2002)
अतिरिक्त ज्ञान:
• वित्त आयोग भारत में एक संवैधानिक निकाय है जिसकी स्थापना भारतीय संविधान के अनुच्छेद 280 के तहत की गई है। इसका मुख्य कार्य केंद्र और राज्य सरकारों के बीच तथा राज्यों के बीच कर राजस्व के वितरण की सिफारिश करना है।
• यहां भारत के सभी वित्त आयोगों और उनके अध्यक्षों की विस्तृत सूची दी गई है:

वित्त आयोग	अध्यक्ष	परिचालन अवधि	
पहला	केसी नियोगी	1952–57	
दूसरा	के. संथानम	1957–62	
तीसरा	ए.के. चंदा	1962–66	
चौथी	पीवी राजमन्नार	1966–69	
पांचवां	महावीर त्यागी	1969–74	
छठा	के. ब्रह्मानंद रेड्डी	1974–79	
सातवीं	जेएम शेलाट	1979–84	
आठवाँ	वाईबी चव्हाण	1984–89	
नौवां	एनकेपी साल्वे	1989–95	
दसवां	केसी पंत	1995–2000	
ग्यारहवें	ए.एम. खुसरो	2000–05	
बारहवें	सी. रंगराजन	2005–10	
तेरहवां	डॉ. विजय एल. केलकर	2010–15	
चौदहवां	वाई.वी. रेड्डी	2015–20	
पं हवीं	एनके सिंह	2020–26	
सोलहवां	अरविंद पनगढ़िया	2026–31	

Q25. सूची-I का सूची-II से मिलान करें।

सूची-I	सूची-II
(A) यथामूल्य टैरिफ	(I) प्रति इकाई निश्चित राशि
(B) स्वायत्तता	(II) यथामूल्य और विशिष्ट टैरिफ का संयोजन
(C) मिश्रित टैरिफ	(III) अन्य देशों के साथ व्यापार नहीं
(D) विशिष्ट टैरिफ	(IV) व्यापारित वस्तु के मूल्य का प्रतिशत

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) (A)-(I), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(IV)
(b) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(II)
(c) (A)-(IV), (B)-(II), (C)-(I), (D)-(III)
(d) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(I)
Ans.(b)
Sol. सही उत्तर (D): (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(I) है।
• **ऐड वैलोरेम टैरिफ (A):** यह एक प्रकार के टैरिफ को संदर्भित करता है जो व्यापारिक वस्तु के मूल्य का एक प्रतिशत होता है। इसलिए, यह (IV) से मेल खाता है, जो "व्यापारिक वस्तु के मूल्य का एक प्रतिशत" बताता है।
• **स्वायत्तता (B):** स्वायत्तता उस स्थिति को संदर्भित करती है जहाँ कोई देश अन्य देशों के साथ व्यापार नहीं करता है। यह **(III) से मेल खाता है**, जिसमें कहा गया है कि "अन्य देशों के साथ व्यापार निषिद्ध है।"
• **संयुक्त टैरिफ (C):** एक संयुक्त टैरिफ, मूल्यानुसार (मूल्य का प्रतिशत) और विशिष्ट टैरिफ (प्रति इकाई निश्चित राशि) दोनों का संयोजन होता है। इसलिए, यह **(II) से मेल खाता है**, जिसमें कहा गया है कि "मूल्यानुसार और विशिष्ट टैरिफ का संयोजन।"
• **विशिष्ट टैरिफ (D):** एक विशिष्ट टैरिफ, आयातित वस्तु की प्रत्येक इकाई के लिए ली जाने वाली एक निश्चित राशि होती है। **यह (I) से मेल खाता है, जिसमें कहा गया है कि "प्रति इकाई निश्चित राशि।"**
Information Booster:
• ऐड वैलोरम टैरिफ: ये टैरिफ आमतौर पर देशों द्वारा उपयोग किए जाते हैं क्योंकि ये वस्तु की कीमत के साथ समायोजित होते हैं। वस्तु का मूल्य जितना अधिक होगा, टैरिफ भी उतना ही अधिक होगा। इसे आयात पर कर लगाने का एक उचित तरीका माना जाता है, क्योंकि टैरिफ आयातित वस्तुओं के मूल्य को दर्शाता है।
• स्वायत्तता: अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के संदर्भ में, स्वायत्तता एक ऐसी स्थिति को संदर्भित करती है जहाँ कोई देश आत्मनिर्भर होता है और आयात या निर्यात पर निर्भर नहीं होता है। स्वायत्तता का पालन करने वाले देशों को अक्सर आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, क्योंकि अन्य देशों में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं तक उनकी पहुँच सीमित होती है।
• मिश्रित टैरिफ: यह टैरिफ दो तत्वों को जोड़ता है: एक ऐड वैलोरम दर और एक विशिष्ट दर। इसका उपयोग यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है कि टैरिफ कम मूल्य और उच्च मूल्य दोनों वस्तुओं पर उचित रूप से लागू हों। दोनों प्रकार के टैरिफ को मिलाकर, देश एक प्रकार के टैरिफ पर अत्यधिक निर्भरता को रोक सकते हैं, जिससे एक संतुलित दृष्टिकोण सुनिश्चित होता है।
• विशिष्ट टैरिफ:विशिष्ट टैरिफ सरल और पूर्वानुमानित होते हैं। ये टैरिफ प्रति इकाई एक निश्चित राशि के आधार पर लागू होते हैं, जिसकी गणना मूल्यानुसार टैरिफ की तुलना में आसान होती है, हालाँकि वस्तुओं की कीमतों में उतार-चढ़ाव के मामलों में यह कम लचीला हो सकता है।

Q26. नवशास्त्रीय विकास सिद्धांत के अनुसार, बचत दर में वृद्धि।
(a) अल्पावधि में उत्पादन की वृद्धि दर को बढ़ाता है।
(b) उत्पादन की दीर्घकालिक वृद्धि दर को बढ़ाता है।
(c) स्थिर-अवस्था पूंजी-श्रम अनुपात को कम करता है।
(d) प्रति व्यक्ति पूंजी और उत्पादन के दीर्घकालिक स्तर को कम करता है।
Ans.(a)
Sol. सही विकल्प: A [अल्पावधि में उत्पादन की वृद्धि दर को बढ़ाता है।]
स्पष्टीकरण:
नवशास्त्रीय विकास सिद्धांत (सोलो-स्वान मॉडल) के अनुसार, बचत दर में वृद्धि से निवेश बढ़ता है, जिससे पूँजी स्टॉक बढ़ता है और अल्पावधि में उत्पादन की वृद्धि दर अस्थायी रूप से बढ़ जाती है।

Information Booster:

• सोलो मॉडल भविष्यवाणी करता है कि बचत दर में परिवर्तन प्रति व्यक्ति उत्पादन के स्तर को प्रभावित करते हैं, लेकिन वे दीर्घकालिक विकास दर को प्रभावित नहीं करते हैं।

• दीर्घकालिक विकास दर तकनीकी प्रगति से प्रेरित होती है, जो बहिर्जात है।

• उच्च बचत दर निवेश वक्र को ऊपर की ओर ले जाती है, जिससे प्रति व्यक्ति उच्च पूँजी और उत्पादन के साथ एक नई स्थिर अवस्था बनती है। कार्यकर्ता।

Additional Knowledge:

• विकल्प 2 गलत है क्योंकि दीर्घकालिक विकास दर अपरिवर्तित रहती है।

• विकल्प 3 गलत है क्योंकि स्थिर अवस्था पूँजी-श्रम अनुपात बढ़ता है।

• विकल्प 4 गलत है क्योंकि प्रति व्यक्ति पूँजी और उत्पादन का दीर्घकालिक स्तर बढ़ता है।

Q27. सूची-I का सूची-II से मिलान करें:

सूची-I	सूची-II
A. भुगतान संतुलन की आय प्रेरित समायोजन प्रक्रिया	I. पॉल सैमुएलसन
B. भुगतान संतुलन का अवशोषण दृष्टिकोण	II. कीन्स, जे.एम.
C. असंभव त्रिमूर्ति	III. सिडनी एस. अलेक्जेंडर
D. कारक मूल्य समकारी प्रमेय	IV. मुंडेल-फ्लेमिंग

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) A-I, B-II, C-III, D-IV

(b) A-II, B-III, C-IV, D-I

(c) A-II, B-III, C-I, D-IV

(d) A-I, B-I, C-III, D-IV

Ans.(b)

Sol. Correct Option: B [A-II, B-III, C-IV, D-I]

Information Booster:

• **भुगतान संतुलन की आय-प्रेरित समायोजन प्रक्रिया (A-II)**: यह सिद्धांत **जे.एम. कीन्स** से संबंधित है। यह सुझाव देता है कि भुगतान संतुलन में घाटा या अधिशेष राष्ट्रीय आय में परिवर्तन लाएगा, जिससे असंतुलन दूर होगा। उदाहरण के लिए, घाटा आय को कम करता है, जिससे आयात में कमी आती है और घाटे में सुधार होता है।

• **भुगतान संतुलन का अवशोषण दृष्टिकोण (B-III)**: यह दृष्टिकोण **सिडनी एस. अलेक्जेंडर** द्वारा विकसित किया गया था। इसमें कहा गया है कि कोई देश अपने भुगतान संतुलन में सुधार केवल अपने अवशोषण (घरेलू खर्च) के सापेक्ष अपने कुल उत्पादन में वृद्धि करके ही कर सकता है।

• **असंभव त्रिमूर्ति (C-IV)**: यह अवधारणा, जिसे "त्रिलेम्मा" भी कहा जाता है, **मुंडेल-फ्लेमिंग** मॉडल से जुड़ी है। यह बताता है कि कोई देश एक साथ एक निश्चित विनिमय दर, मुक्त पूँजी संचलन और एक स्वतंत्र मौद्रिक नीति नहीं अपना सकता। कोई देश इन तीनों में से केवल दो ही चुन सकता है।

• **कारक मूल्य समकारी प्रमेय (D-I)**: यह प्रमेय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के हेक्शर-ओहलिन मॉडल का हिस्सा है, और इसे **पॉल सैमुएलसन** द्वारा औपचारिक रूप दिया गया था। इसमें कहा गया है कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, कारक गतिशीलता की अनुपस्थिति में भी, देशों के बीच कारक मूल्यों (जैसे, मजदूरी और पूंजी पर प्रतिफल) के समानीकरण को बढ़ावा देगा।

Additional Knowledge:

• असंभव त्रिमूर्ति, खुली अर्थव्यवस्था वाले समष्टि अर्थशास्त्र में एक प्रमुख अवधारणा है। मुंडेल-फ्लेमिंग मॉडल किसी अर्थव्यवस्था की विनिमय दर, ब्याज दर और उत्पादन के बीच अल्पकालिक संबंध का विश्लेषण करता है।

• भुगतान संतुलन समायोजन के लिए अवशोषण दृष्टिकोण, लोच दृष्टिकोण का एक विकल्प था।

Q28. भारत की पहली कृषि जनगणना किस कृषि वर्ष में की गई थी?

(a) 1950-51

(b) 1960-61

(c) 1970-71

(d) 1980-81

Ans.(c)

Sol. सही उत्तर: विकल्प C

स्पष्टीकरण:

• भारत में **पहली कृषि जनगणनाकृषि वर्ष 1970-71** में की गई थी।
• इसे भूमि जोत के आँकड़े एकत्र करने और देश की कृषि अर्थव्यवस्था की जानकारी प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया था।
Information Booster:
• भारत में कृषि जनगणना हर **पाँच साल** में की जाती है, जो कृषि पद्धतियों, भूमि स्वामित्व और फसल पैटर्न में बदलते पैटर्न पर नज़र रखने में सहायता के लिए अद्यतन आँकड़े प्रदान करती है।
• पूरी प्रक्रिया तीन चरणों में आयोजित की जाती है।

Q29. सूची I का सूची II से मिलान करें

सूची I (अवधारणाएँ)	सूची II (द्वारा दी गई)
A. मितव्ययिता का विरोधाभास	I. के. बोल्डिंग
B. जल-हीरा विरोधाभास	II. ए. सी. पिगौ
C. वेतन रोजगार विरोधाभास	III. जे. एम. कीन्स
D. समष्टि आर्थिक विरोधाभास	IV. एडम स्मिथ

नीचे दिए गए विकल्पों में से **सही** उत्तर चुनें:
(a) A-II, B-I, C-III, D-IV
(b) A-I, B-II, C-III, D-IV
(c) A-III, B-IV, C-II, D-I
(d) A-III, B-IV, C-I, D-II
Ans.(c)
Sol. सही विकल्प: C [A-III, B-IV, C-II, D-I]
स्पष्टीकरण:
• **A. मितव्ययिता का विरोधाभास:** यह अवधारणा, जो तर्क देती है कि बचत में वृद्धि से समग्र आर्थिक विकास में कमी आ सकती है, **जे.एम. कीन्स** के सामान्य सिद्धांत का एक केंद्रीय विचार है।
• **B. जल-हीरा विरोधाभास:** जीवन के लिए आवश्यक जल सस्ता क्यों है जबकि हीरे, जो एक विलासिता है, महंगे क्यों हैं, इस पहेली पर **एडम स्मिथ** ने अपनी कृति *द वेल्थ ऑफ नेशंस* में प्रसिद्ध रूप से चर्चा की थी।
• **C. वेतन-रोज़गार विरोधाभास:** यह विरोधाभास, जो यह सुझाव देता है कि मौद्रिक वेतन में कमी से रोज़गार में वृद्धि आवश्यक नहीं है, **ए.सी. पिगौ** के कार्य और शास्त्रीय विचारधारा से जुड़ा है।
• **D. समष्टि आर्थिक विरोधाभास:** यह विचार कि जो एक भाग के लिए सत्य है वह समग्र के लिए सत्य नहीं हो सकता है, या यह कि सूक्ष्म आर्थिक सिद्धांत हमेशा समष्टि स्तर तक नहीं बढ़ते हैं, **के. बोल्डिंग**।
Information Booster:
• **मितव्ययिता का विरोधाभास** कीनेसियन अर्थशास्त्र का एक सहज-ज्ञान-विरोधी सिद्धांत है।
• **जल-हीरा विरोधाभास** का समाधान सीमांतवादी क्रांति द्वारा किया गया, जिसने सीमांत उपयोगिता की अवधारणा को प्रस्तुत किया।
Additional Knowledge:
• **मितव्ययिता का विरोधाभास** सूक्ष्म-अर्थशास्त्र और समष्टि-अर्थशास्त्रीय सोच के बीच एक मूलभूत अंतर को उजागर करता है।
• किसी एक व्यक्ति का ज़्यादा बचत करना उसके लिए अच्छा हो सकता है, लेकिन अगर सभी लोग एक साथ ज़्यादा बचत करें, तो इससे कुल माँग में गिरावट आ सकती है और इस तरह मंदी आ सकती है।

Q30. सूची I का सूची II से मिलान करें:

सूची I (15वें वित्त आयोग के मानदंड)	सूची II (15वें की अनुशंसा के अनुसार भारांक)
A. आय अंतर	I. 15%
B. जनसंख्या	II. 12.5%
C. जनसांख्यिकीय प्रदर्शन	III. 45%
D. वन और पारिस्थितिकी	IV. 10%

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें: (a) A-III, B-IV, C-I, D-II (b) A-II, B-I, C-III, D-IV (c) A-III, B-I, C-II, D-IV (d) A-I, B-IV, C-II, D-III **Ans.(c) Sol. सही विकल्प: C [A-III, B-I, C-II, D-IV]** • A. आय अंतर → III. 45% • B. जनसंख्या → I. 15% • C. जनसांख्यिकीय प्रदर्शन → II. 12.5% • D. वन और पारिस्थितिकी → IV. 10% **Information Booster:** • **आय अंतर** का उद्देश्य विकास में समानता को बढ़ावा देने के लिए

राज्यों के बीच आय असमानता को पाटना है। • **जनसंख्या** अधिक जनसंख्या वाले राज्यों को आवंटित संसाधनों के हिस्से को प्रभावित करती है। • **जनसांख्यिकीय प्रदर्शन** राज्यों द्वारा अपनी जनसंख्या वृद्धि को प्रबंधित करने के प्रयासों को दर्शाता है। • **वन और पारिस्थितिकी** राज्य की पारिस्थितिक भूमिका पर विचार करता है, जैसे वनों का प्रबंधन और पर्यावरण का संरक्षण। **Additional Information:** • 15वें वित्त आयोग ने इन मानदंडों का उपयोग यह सुनिश्चित करने के लिए किया कि यह निधि राज्यों की वित्तीय और जनसांख्यिकीय, दोनों ज़रूरतों को पूरा करते हुए, समान विकास को बढ़ावा देती है। • क्षैतिज हस्तांतरण दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करता है कि राज्यों को संसाधन राजनीतिक विचारों के बजाय मानदंडों के आधार पर आवंटित किए जाएँ।